एम.एच.डी.–02
आधुनिक हिंदी काव्य
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–2
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–2/टी.एम.ए./2021–2022
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. भारतेंदु की राजभक्ति और देशभक्ति की कविताओं की तुलना करते हुए सिद्ध कीजिए कि उनकी कविता का मूल स्वर देशभक्ति है। 16

2. छायावादी कविता में जयशंकर प्रसाद के महत्व को रेखांकित कीजिए। 16

3. पंत के काव्य में अंतर्निहित प्रगतिवादी जीवनबोध पर प्रकाश डालिए। 16

4. अज्ञेय की काव्य भाषा का वैशिष्टय बताइए। 16

5. निम्नलिखित प्रत्येक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) यह नियम है, उद्यान में पककर गिरे पत्ते जहाँ, 12
प्रकटित हुए पीछे उन्हीं के लहलहे पल्लव वहाँ।
पर हाय! इस उद्यान का कुछ दूसरा ही हाल है,
पतझड़ कहें या सूखना, कायापलट या काल है?

(ख) मेरा पग पग संगीत भरा, 12
श्वासों से स्वप्न–पराग झरा,
नभ के नव रँग, बुनती दुकूल
छाया में मलय–बयार पली !
मैं क्षितिज–भृकुटि पर घिर धूमिल
चिन्ता का भार बनी अविरल,
रज–कण पर जल–कण हो बरसी
नवजीवन–अंकुर बन निकली!

(ग) यह वह विश्वास, नहीं जो अपनी लघुता में भी काँपा, 12
वह पीड़ा, जिस की गहराई को स्वयं उसी ने नापा;
कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के धुँधुआते कडुवे तम में
यह सदा–द्रवित, चिर–जागरुक, अनुरक्त–नेत्र,
उल्लम्ब–बाहु, यह चिर–अखंड अपनापा।
जिज्ञासु प्रबुद्ध, सदा श्रद्धामय, इस को भक्ति को दे दोः
यह दीप, अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता, पर इस को भी पंक्ति को दे दो।